आदम पहले रचा गया – और इसका अर्थ है ...

मार्ग मोवज़्को (Marg Mowczko) · जर्मन अनुवाद: Hans-Jörg Ronsdorf · नवंबर 2022 · अक्टूबर 2026 में संशोधित

पहलौठे का अधिकार और पितृसत्ता

कल मैं एक युवक से बात कर रही थी, और हमारी बातचीत के दौरान उसने बताया कि वह मानता है कि बाइबल "जब तक हम पृथ्वी पर हैं, तब तक एक कोमल पितृसत्ता" सिखाती है। इस "नरम पितृसत्ता" पर उसके विश्वास का एक कारण यह है कि वह पहलौठे के नियम को समाज के लिए परमेश्वर की योजना का भाग मानता है, और आदम को इसका आदर्श उदाहरण माना जाता है, क्योंकि वह हव्वा से पहले रचा गया था।

Merriam-Webster Dictionary के अनुसार "पहलौठे का अधिकार" (ज्येष्ठाधिकार, Primogenitur[1]) के दो अर्थ हो सकते हैं। इसका अर्थ केवल यह हो सकता है (1) "एक ही माता-पिता की संतानों में पहलौठा होने की स्थिति", जिसके भिन्न-भिन्न निहितार्थ होते हैं, या इसका अर्थ हो सकता है (2) "उत्तराधिकार का एक अनन्य अधिकार, जो सबसे बड़े पुत्र को मिलता है"। पहली परिभाषा के अर्थ में आदम और हव्वा को एक ही माता-पिता, अर्थात परमेश्वर, की संतान समझा जा सकता है, जिनमें आदम पहलौठा है (लूका 3:38; तुलना कीजिए 1 कुरिन्थियों 11:12)।

उत्पत्ति 2 और 1 तीमुथियुस 2:13 (उत्पत्ति 2 का एक सारांश) हमें बताते हैं कि आदम (या ha'adam) पहले और हव्वा दूसरे स्थान पर रची गई। परन्तु क्या ये बाइबल-स्थल यह संकेत देते हैं कि यह क्रम महत्वपूर्ण है और संबंधों की रचना के लिए परमेश्वर की योजना का भाग है? **क्या वे यह संकेत देते हैं कि पहलौठेपन का, या पुरुष को पहले और स्त्री को दूसरे स्थान पर रखने वाली प्राथमिकता का, कोई निरंतर चलने वाला नमूना है?** क्या ये शास्त्र किसी प्रकार से केवल पुरुषों के अधिकार या एक कोमल पितृसत्ता को निर्धारित करते हैं? क्या वे आदम के लिए किसी ऐसे "उत्तराधिकार के अनन्य अधिकार" की ओर संकेत करते हैं जिससे हव्वा बाहर रहती है?

5 कारण, जिनसे पहलौठेपन का तर्क काम नहीं करता

मसीहियों के बीच पितृसत्ता को उत्पत्ति में पहलौठे के अधिकार से जोड़ना समस्याओं से भरा है। यहाँ पाँच कारण हैं कि यह क्यों काम नहीं करता।

1. उत्पत्ति 2:21-22 में वर्णित ऑपरेशन के बाद अदन का पहला मनुष्य वैसा नहीं रहा जैसा परमेश्वर द्वारा अपनी पहली रचना के समय था। उसके शरीर से एक भाग या एक पक्ष निकाल लिया गया था[2], उसका एक भाग अब नहीं था और स्त्री का एक अभिन्न अंग बन गया था। आदम (या ha'adam) के शरीर के एक महत्वपूर्ण भाग का हव्वा में यह स्थानांतरण इस धारणा को कम स्पष्ट और कम निर्णायक बना देता है कि पुरुष पहला और स्त्री दूसरी है।

2. पहलौठेपन का संबंध जन्म के क्रम से है, परन्तु न आदम का जन्म हुआ था और न हव्वा का; दोनों को परमेश्वर ने रचा था। ऐसा कोई बाइबल-पद नहीं है जो कहता हो कि आदम "पहलौठा" था।

3. पहलौठेपन की प्रथा बहुत-से प्राचीन समाजों का भाग थी, जिनमें इस्राएली समाज भी शामिल था, परन्तु वह केवल पुत्रों से संबंधित थी, न कि पुत्रियों से, न कि स्त्रियों से।

4. बाइबल के बहुत-से प्रमुख परिवारों ने इस प्रथा का पालन नहीं किया।

सिंथिया वेस्टफ़ॉल (Cynthia Westfall) इस चौथे बिंदु के बारे में लिखती हैं।

> उत्पत्ति के पूरे वृत्तांत में आरंभ से ही यह स्पष्ट है कि जो पहले जन्मा या पहले आया, उसके पास आवश्यक रूप से अधिकार नहीं था। भाइयों के बीच पहलौठेपन को बार-बार उलटा गया, इसलिए उत्पत्ति को पुरुष-अधिकार के पक्ष में इस तर्क के रूप में इस्तेमाल नहीं किया जा सकता कि आदम पहले रचा गया। कैन पहले जन्मा, परन्तु हाबिल को परमेश्वर की कृपा मिली। एसाव पहले जन्मा, परन्तु परमेश्वर ने याकूब को चुना। रूबेन पहले जन्मा, परन्तु मसीह की वंश-रेखा यहूदा से होकर आई, और यूसुफ़ ने परिवार को बचाया और उस पर अधिकार प्राप्त किया। मनश्शे यूसुफ़ का पहलौठा था, परन्तु याकूब ने अपना दाहिना हाथ एप्रैम के सिर पर रखा, यह कहने के लिए कि वह बड़ा होगा।

पुराने नियम की दूसरी पुस्तकें भी दिखाती हैं कि परमेश्वर ने छोटे भाइयों को उनके बड़े भाई-बहनों से अधिक अधिकार दिया। उदाहरण के लिए, मूसा के पास अपने बड़े भाई हारून से अधिक अधिकार था; दाऊद यिशै का सबसे छोटा पुत्र था, परन्तु परमेश्वर ने उसे इस्राएल का राजा चुना; सुलैमान दाऊद का उत्तराधिकारी बना, यद्यपि वह दाऊद का पहलौठा पुत्र नहीं था।

इस्राएलियों ने पहलौठेपन की प्रथा का न तो कड़ाई से और न ही सामान्य रूप से पालन किया। इससे भी महत्वपूर्ण यह है कि कुछ महत्वपूर्ण मामलों में परमेश्वर ने स्वयं इस प्रथा पर ध्यान नहीं दिया। और निर्गमन 4:22 में वह रूपक के रूप में पूरी इस्राएल जाति (केवल पुरुषों को नहीं) को अपना पहलौठा पुत्र कहता है।

5. महत्वपूर्ण बात यह है कि नई सृष्टि में यीशु के अनुयायियों के बीच पहलौठेपन की अवधारणा का कोई स्थान नहीं है। बल्कि यीशु ने सिखाया कि उसके राज्य में "जो अंतिम हैं, वे प्रथम होंगे, और जो प्रथम हैं, वे अंतिम होंगे" (मत्ती 20:16)। उसने इसी प्रकार के दूसरे संस्कृति-विरोधी और संतुलन लाने वाले सिद्धांत भी सिखाए।

पहलौठे का अधिकार और यीशु

परमेश्वर के राज्य में, जिससे हम संबंध रखते हैं, एकमात्र व्यक्ति जो पहलौठे के अधिकार का दावा कर सकता है, स्वयं यीशु है। वेस्टफ़ॉल इस ओर ध्यान दिलाती हैं कि "यीशु हम सबका पहलौठा है" जो मसीह में हैं (रोमियों 8:29; कुलुस्सियों 1:15,18), और यह सत्य "उसके अनुयायियों के बीच के संबंधों को सापेक्ष बना देता है"। **दूसरे शब्दों में, यीशु के अनुयायियों के बीच समानता है, क्योंकि हम अपने लिंग की परवाह किए बिना अपने बड़े भाई के स्वरूप में ढाले जाते हैं।**

पहलौठे का अधिकार कोई ऐसी गतिशीलता नहीं है जिसे परमेश्वर ने समाज में स्थापित किया हो या जिसे यीशु ने अनुमोदित किया हो।[3] इसके अतिरिक्त पौलुस ने इस धारणा को निरस्त किया कि पुरुषों की कोई विशेष स्थिति या विशेषाधिकार है, केवल इसलिए कि आदम पहले रचा गया था। 1 कुरिन्थियों 11:12 में पौलुस सिखाता है कि यद्यपि पहली स्त्री पहले पुरुष से निकली, परन्तु हर दूसरा पुरुष किसी स्त्री से जन्मा है। उसने आगे समझाया: "परन्तु सब वस्तुएँ परमेश्वर की ओर से हैं।" पुरुषों और स्त्रियों दोनों का अंतिम स्रोत परमेश्वर है। **यहाँ लिंगों के बीच कोई भेद नहीं, बल्कि लिंगों की परस्पर निर्भरता है।**

> **1 कुरिन्थियों 11:11-12 तौभी प्रभु में न तो स्त्री पुरुष के बिना है, और न पुरुष स्त्री के बिना। क्योंकि जैसे स्त्री पुरुष से है (आदम), वैसे ही पुरुष स्त्री के द्वारा है (कैन आदि); परन्तु सब कुछ परमेश्वर से है।**

पुरुषों के पास न तो अपनी बहनों से ऊँचा अधिकार है और न ही उनसे बेहतर उत्तराधिकार। बल्कि हम सब एक अद्भुत उत्तराधिकार में भागी होंगे (इफिसियों 1:21-22)। मसीही पुरुष और स्त्रियाँ संगी वारिस हैं, पहलौठे के अधिकार के ज़रा-से भी संकेत के बिना, हम तो अपने बड़े भाई यीशु के भी संगी वारिस हैं (रोमियों 8:16-17)!

नई वाचा के और मसीह में हमारी नई सृष्टि के विषय में अद्भुत धर्मवैज्ञानिक सत्य यीशु के अनुयायियों के समुदाय के भीतर हमारे वर्तमान संबंधों पर सीधा प्रभाव डालते हैं। **इस समुदाय में, अर्थात कलीसिया में, किसी भी प्रकार के लिंग-पदानुक्रम या पितृसत्ता के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिए।**

बी. टी. रॉबर्ट्स (B.T. Roberts) पुरुष के बाद दूसरे स्थान पर आने वाली स्त्री के बारे में यह टिप्पणी करते हैं।

[कुछ लोगों द्वारा] इस बात पर ज़ोर दिया जाता है कि बाइबल स्त्री को पुरुष से हीन और उसके अधीन प्रस्तुत करती है; इसलिए उसे न तो कलीसिया में और न ही राज्य में पुरुष के बराबर कोई स्थान लेने की अनुमति होनी चाहिए। इसके प्रमाण के रूप में यह तथ्य प्रस्तुत किया जाता है कि स्त्री अंत में रची गई। परन्तु यदि इससे कुछ सिद्ध होता है, तो उसकी श्रेष्ठता। क्योंकि सृष्टि का कार्य निम्न से उच्च की ओर एक नियमित क्रम में आगे बढ़ा।

B.T. Roberts, Ordaining Women (स्त्रियों को अभिषिक्त करना) (1891)

मूल: मार्ग मोवज़्को (Marg Mowczko), "Adam was created first and this means …", 3 मार्च 2017, https://margmowczko.com/adam-created-first/ – लेखिका की कृपापूर्ण अनुमति से जर्मन में अनूदित।

टिप्पणियाँ

1. तकनीकी भाषा में ज्येष्ठाधिकार (Primogenitur) उत्तराधिकार की उस व्यवस्था को कहते हैं जिसके अनुसार केवल पहलौठी संतान किसी मृत व्यक्ति की विरासत और क़ानूनी उत्तराधिकार प्राप्त करती है, जबकि उसके छोटे भाई-बहनों पर ध्यान नहीं दिया जाता। पहलौठी संतान की विरासत और क़ानूनी उत्तराधिकार फिर उसकी पहलौठी संतान को मिलता है। Wikipedia
2. इब्रानी शब्द tsela, जिसका उत्पत्ति 2 में परंपरागत रूप से "पसली" अनुवाद किया जाता है, सामान्यतः "पक्ष" (बगल, एक ओर का भाग) का अर्थ देता है। (स्ट्रॉन्ग (Strong) संख्या 6763 देखिए।) जॉन एच. वॉल्टन (John H. Walton) समझाते हैं कि जब हम देखते हैं कि इब्रानी बाइबल में दूसरे स्थानों पर tsela शब्द का उपयोग कैसे होता है, तो "हमें इस निष्कर्ष पर पहुँचना होगा कि परमेश्वर ने आदम का एक पक्ष लिया – जिसका संभवतः अर्थ है कि उसने आदम को दो भागों में काटा और एक भाग से स्त्री को रचा।" Walton, The Lost World of Adam and Eve (Downers Grove: InterVarsity Press, 2015), 78।
3. **यीशु कभी भी किसी ऐसी सृष्टि की व्यवस्था का उल्लेख नहीं करता जिसमें पुरुष पहले स्थान पर और स्त्री दूसरे स्थान पर हो। सुसमाचारों में वह उत्पत्ति 1 से उद्धृत करता है, जहाँ कहा गया है कि पुरुष और स्त्री एक साथ रचे गए। उदाहरण के लिए मत्ती 19:4 में यीशु फ़रीसियों से पूछता है: "क्या तुमने नहीं पढ़ा कि सृष्टिकर्ता ने आरंभ से उन्हें नर और नारी करके बनाया? यीशु उत्पत्ति 2 से भी उद्धृत करता है: "इस कारण पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी के साथ रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे।" यीशु ने विवाह में एकता (अर्थात एक होना) सिखाई; उसने यह नहीं सिखाया कि विवाह में पुरुष का अधिकार या लिंग-पदानुक्रम है या होना चाहिए (मत्ती 19:5-6।**